3

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022— बच्चों की शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए एक प्रेरणादायक पहल

डिगर सिंह फर्स्वाण*

बुनियादी शिक्षा शब्द का अर्थ है— जीवन के लिए आवश्यक मौलिक ज्ञान और कौशल प्रदान करने वाली शिक्षा। यह शिक्षा न केवल साक्षरता और गणना तक सीमित है, बल्कि जीवन जीने की कला, नैतिक मूल्यों, सामाजिक व्यवहार, स्वावलंबन और कौशल विकास को भी समाहित करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022, भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को ठोस, एकीकृत और समावेशी आधार देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। सन 2020 में आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा को समग्र, बहु-आयामी और जमीनी स्तर से जोड़ने पर बल दिया। इसी के अंतर्गत ऐसी रूपरेखा को विकसित किया गया जो 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए, शिक्षा के पहले चरण की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप तैयार की गई है। यह भारत में बुनियादी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने हेतु एक ऐतिहासिक पहल है और व्यक्ति के जीवन का आधार है। यह केवल विद्यालय जाने का पहला चरण नहीं है, बल्कि उस जीवन की नींव है, जो बच्चा भविष्य में जीएगा। इसलिए नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चा गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और बुनियादी शिक्षा प्राप्त करे। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022 बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु एक व्यवस्थित और नवाचारी हस्तक्षेप के रूप में उभर रही है, साथ ही यह इसके लंबी अवधि के प्रभावों, अध्यापक शिक्षा पर प्रभाव तथा राज्य व केंद्र सरकारों की क्रियान्वयन रणनीतियों की विवेचन करता है।

बुनियादी शिक्षा अब केवल अक्षरज्ञान या पाठ्यपुस्तक आधारित नहीं रह गई है। वर्तमान समय में यह एक बहु-आयामी, संवेदी और समावेशी प्रक्रिया बन गई है, जिसमें विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास मुख्य उद्देश्य है। शिक्षा का यह स्वरूप न केवल बच्चे को वर्तमान के लिए तैयार करता है, बल्कि उन्हें भविष्य की जटिलताओं से निपटने के लिए सक्षम भी बनाता है। भारत में शिक्षा प्रणाली को स्तर की

*प्राध्यापक एवं निदेशक, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखंड) 263 139

सशक्त और समावेशी बनाने के लिए बुनियादी शिक्षा का सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण को साकार करने हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा वर्ष 2022 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 को जारी किया गया। यह रूपरेखा 3–8 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा पर केंद्रित है, जो उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और भाषायी विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाती है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के अनुरूप यह एक प्रेरणादायक परिवर्तन का प्रतीक है, जिसमें पारंपरिक शैक्षिक दबाव से हटकर खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और अनुभवात्मक शिक्षण को प्राथमिकता दी गई है। यह रूपरेखा विद्यार्थियों के प्राकृतिक अन्वेषण की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए पाठ्यवस्तु और शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने पर बल देती है (एन.ई.पी. 2020; एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022)। भारत जैसे विविध सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश वाले देश में एकीकृत, लेकिन लचीली पाठ्यचर्या की आवश्यकता थी जो क्षेत्रीय भाषाओं, सांस्कृतिक विविधताओं तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो। इस रूपरेखा में मातृभाषा या स्थानीय भाषा को शिक्षा के प्रारंभिक माध्यम के रूप में मान्यता दी गई है जो बच्चों के सीखने की क्षमता को सुदृढ़ करती है (यूनेस्को, 2019)। प्रारंभिक बाल्यावस्था की अवधि जीवन भर सीखने और विकास की बुनियाद रखती है और यह वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 18)।

इस रूपरेखा में चार मुख्य घटक— खेल, कथानक, गतिविधियाँ और अनुभव पर विशेष बल दिया गया है जो बालकों को सहजता से सीखने में सहयोग करते हैं। इसके अंतर्गत शिक्षक की भूमिका को 'सहयात्री' और 'मार्गदर्शक' के रूप में परिभाषित किया गया है, जो विद्यार्थियों के सीखने के वातावरण को पोषित करता है (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 18)। बुनियादी स्तर की शिक्षा किसी भी बच्चे के जीवन की आधार होती है। यह रूपरेखा इसी बुनियाद स्तर को सुदृढ़ करने का प्रयास है। यह रूपरेखा बुनियादी शिक्षा में अध्ययनरत बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए खेल, गतिविधि एवं अनुभव-आधारित अधिगम को केंद्र में रखती है। इस दस्तावेज के प्रभाव को समझने हेतु विभिन्न सरकारी पहलों तथा शिक्षण नवाचारों का विश्लेषण आवश्यक है। बुनियादी शिक्षा का महत्व अत्यंत व्यापक और दूरगामी है। यह न केवल बच्चे के प्रारंभिक शैक्षिक जीवन की नींव रखती है, बल्कि उसके समग्र विकास, सोचने की क्षमता, मूलभूत कौशल और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को भी आकार देती है। बुनियादी शिक्षा तब दी जाती है जब मस्तिष्क का विकास सबसे तेज होता है। यह वह समय होता है जब बच्चे भाषा, संख्यात्मकता, सामाजिक व्यवहार और भावनात्मक बुद्धिमत्ता सीखते हैं। यदि इस चरण में शिक्षा उपयुक्त न हो तो आगे की शिक्षा में कठिनाई आती है। शोध के अनुसार, मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। बुनियादी शिक्षा बच्चों को पढ़ना, लिखना और गिनना सिखाती है जो आगे की सभी विषयगत शिक्षाओं के लिए

अनिवार्य हैं। यदि बच्चा कक्षा 3 तक आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) प्राप्त नहीं करता है तो वह भविष्य में सीखने से वंचित रह सकता है। निपुण भारत मिशन इसी लक्ष्य पर केंद्रित है— 'प्रत्येक विद्यार्थी पढ़े और समझे'। यह शिक्षा बच्चों में सहानुभूति, सहयोग, आत्मनियंत्रण, टीमवर्क और नैतिकता जैसे गुणों का विकास करती है। यह उन्हें एक बेहतर नागरिक बनने की दिशा में मार्गदर्शन देती है। यह शिक्षा अभिव्यक्ति और जिज्ञासा को प्रोत्साहन प्रदान करता है। यूनिसेफ के अनुसार, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में निवेश का सामाजिक लाभ दस गुना तक हो सकता है। जब बच्चों को प्रारंभिक वर्षों में आनंददायक और रोचक शिक्षा मिलती है तो वे विद्यालय के साथ लंबे समय तक जुड़े रहते हैं। इससे अपव्यय एवं अवरोधन में कमी आती है। इसलिए नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि हर विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण और समावेशी बुनियादी शिक्षा प्राप्त करे।

भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की स्थिति विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों, क्षेत्रीय असमानताओं और सीमित संसाधनों के कारण असमान रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस असमानता को दूर करने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु ई.सी.सी.ई. को औपचारिक शिक्षा की प्रथम और महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित किया है (एन.ई.पी. 2020)। इस नीति के परिप्रेक्ष्य में एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 एक ठोस कदम है जिसका उद्देश्य सीखने की नींव को सशक्त करना है। इस रूपरेखा के अनुसार विद्यार्थियों का विकास केवल संज्ञानात्मक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसकी भाषा, सामाजिकता, कल्पनाशक्ति और भावनात्मक चेतना के समेकित विकास से होता है (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022)। अंतर्राष्ट्रीय शोध बताते हैं कि 3–8 वर्ष की अवस्था में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियाँ तथा जीवन गुणवत्ता में दीर्घकालीन सुधार होता है (हेकमन, 2006)। यह शिक्षकों की भूमिका को एक 'सहायक अधिगम-सहयोगी' के रूप में परिभाषित करता है। अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाए (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 35)।

राष्ट्रीय पाठयचर्चा की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के उद्देश्य

बुनियादी स्तर की शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) के उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्देशों के अनुरूप तैयार किए गए हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के प्रारंभिक शिक्षा को अधिक समावेशी, आनंददायक, बाल-केंद्रित और विकासात्मक रूप से उपयुक्त बनाना है। इसमें बुनियादी शिक्षा के प्रभावशाली बनाने हेतु बाल-केंद्रित और विकासात्मक शिक्षा पर बल दिया गया है। इसके अंतर्गत 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों की सीखने की जरूरतों के अनुसार पाठ्यचर्या विकसित करना तथा शिक्षा को संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक विकास के अनुरूप बनाने पर बल दिया गया है। इसके अंतर्गत

खेल आधारित और गतिविधि आधारित अधिगम की बात की गई है। इस रूपरेखा के अनुसार बच्चों के लिए शिक्षण को खेल, गीत, कहानियों, कला और गतिविधियों के माध्यम से रोचक और अनुभवात्मक बनाने पर बल दिया गया है जिससे बच्चों में सीखने के प्रति उत्साह तथा अभिरुचि का विकास किया जा सके। इसमें भाषा विकास और बहुभाषिकता के आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अपनाने पर बल दिया गया है जिससे विद्यार्थियों की मातृभाषा तथा स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान किए जाने को प्राथमिकता दी गई है, जिससे बच्चों में प्रारंभिक वर्षों में भाषायी समझ और अभिव्यक्ति को सुदृढ़ किया जा सके।

प्रारूप में इस स्तर पर विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) का ज्ञान प्रदान करने पर बल दिया गया है जिससे बच्चों में पढ़ने, लिखने और गणितीय समझ का सशक्त आधार विकसित की जा सके। इसके अंतर्गत इस उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधताओं तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद सभी विद्यार्थियों को समान गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा प्रदान किया जाना चाहिए। मनुष्य के जीवन में सामाजिक तथा शैक्षिक मूल्यों का अत्यधिक महत्व होता है इन मूल्यों के विकास हेतु बच्चों में संवेदनशीलता, सहानुभूति, सहयोग, अनुशासन और नागरिक मूल्यों के विकास करने का प्रयास किया जाना चाहिए। शिक्षा में माता-पिता और समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का सही मूल्यांकन एवं समग्र विकास हो सके। शिक्षा में बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत शिक्षकों को बच्चों की वैयक्तिक विभिन्नता, उनकी रुचि, योग्यता तथा अभिक्षमता को जानना आवश्यक होता है जिससे कि वे बालकेंद्रित, संवेदनशील और रचनात्मक शिक्षण विधियों को अपनाकर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सकें इसके लिए शिक्षकों को आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। अत: यह कहा जा सकता है कि यह प्रारूप बच्चों की बुनियादी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देता है जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों के सीखने की प्रवृत्तियों का समुचित विकास किया जा सके।

राष्ट्रीय पाठयचर्चा की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 की अवधारणा

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 की अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को मूर्त रूप देने हेतु विकसित की गई है। यह रूपरेखा 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों की समग्र शिक्षा, देखभाल और विकास को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) के लिए एक सशक्त शैक्षिक आधार प्रदान करती है। इसका मूल उद्देश्य बच्चों के सहज, खेल-आधारित, अन्वेषणपूर्ण और अनुभवजन्य अधिगम को बढ़ावा देना है, ताकि वे ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में रुचि लें और उनके अंदर जीवन-भर सीखते रहने की क्षमता विकसित हो। यह रूपरेखा विद्यार्थियों की भाषायी, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं के संतुलित

विकास को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। बुनियादी शिक्षा बच्चों को सोचने, प्रश्न पूछने और नए विचारों को समझने के लिए प्रेरित करती है। यह बच्चों में रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन का विकास करती है। बुनियादी शिक्षा सभी विद्यार्थियों चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, लिंग अथवा सामाजिक पृष्ठभूमि से हों या किसी भी प्रकार से शारीरिक रूप से अक्षम हो, सभी को समान अवसर देती है। इससे लिंग भेदभाव और सामाजिक विषमता को कम करने में सहायता मिलती है। एक शिक्षित बच्चा ही आगे चलकर कुशल कार्यकर्ता, उद्यमी या नेतृत्वकर्ता बनता है। बुनियादी शिक्षा भारत जैसे विकासशील देश में मानव संसाधन को सशक्त बनाने का प्रथम कदम है।

राष्ट्रीय पाठयचर्चा की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 का स्वरूप

एन.सी.एफ.- एफ. एस. 2022 को चार चरणों में बाँटा गया है, जो आधारभूत चरण का भाग हैं—

1. **आयु समूह**— इसमें 3–8 वर्ष तक के बच्चों को ध्यान में रखते हुए यह रूपरेखा बनाई गई है। इसे दो प्रमुख उपचरणों में बाँटा गया है— पूर्व-प्राथमिक चरण 3–6 वर्ष (बालवाटिका/आँगनवाड़ी) तथा प्रारंभिक/प्राथमिक चरण 6–8 वर्ष (कक्षा 1 और 2)।
2. **प्रमुख विशेषताएँ**— इसकी प्रमुख विशेषताओं में खेल आधारित शिक्षण है, जिसके अंतर्गत अधिगम को स्वाभाविक एवं आनंददायक बनाने हेतु खेलों और गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा देना, भाषा विकास पर बल विशेषकर मातृभाषा तथा स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान कर भावनात्मक एवं संप्रेषणीय विकास पर बल देना, अनुभवात्मक एवं अन्वेषणात्मक शिक्षा प्रदान करना जिसके अंतर्गत बच्चों की जिज्ञासा को पोषित करने हेतु गतिविधियों और परियोजनाओं पर आधारित शिक्षण प्रदान करना, संपूर्ण विकास जिसमें पाँच प्रमुख विकासात्मक क्षेत्रों— शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक तथा भाषायी विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की योजना बनाना तथा स्थानिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलन योग्य पाठ्यक्रम तैयार करना है।
3. **पाठ्यविषय के घटक**— इस रूपरेखा में पाठ्यविषय के विभिन्न घटकों को, जैसे— भाषा एवं साक्षरता, गणितीय सोच, पर्यावरणीय जागरूकता, कला और अभिव्यक्ति, स्वास्थ्य, स्वच्छता, खेल आदि को सम्मिलित करने पर बल दिया गया है, जिससे बच्चे का समग्र विकास किया जा सके।
4. **शिक्षण विधियाँ**— अंतिम चरण के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के शिक्षण विधियों को बुनियादी शिक्षा के शिक्षण में सम्मिलित करने पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से गतिविधि-आधारित शिक्षण, कहानी-कथन और कविता, समूह कार्य, सहकारी अधिगम तथा स्थानीय संसाधनों और परिवेश का उपयोग जैसे शिक्षण विधियों का प्रयोग कर बच्चों में सीखने के प्रति उत्सुकता विकसित की जा सके।

भारत सरकार की पहलें

बुनियादी शिक्षा को रुचिकर तथा गुणवत्तापरक बनाने के लिए केंद्रीय स्तर पर निरंतर प्रयास किए जाते रहे हैं। वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुसार एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के क्रियान्वयन के लिए भारत सरकार ने बहुस्तरीय और बहु-आयामी पहल की हैं जिसके अंतर्गत नीतिगत बदलाव, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन निर्माण और मूलभूत साक्षरता की दिशा में ठोस कदम लिया गया है। यह पहल बच्चों के संपूर्ण विकास के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता में भी ऐतिहासिक सुधार लाने की क्षमता रखती है।

1. एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रखी गई, जिसमें 3–8 वर्ष के बच्चों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। इसमें तक आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) को मिशन मोड में लागू करने की बात की गई एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा शृंखला का पुनर्गठन किया है इसके अंतर्गत रा.शै.अ.प्र.प. की अगुवाई में चार स्तरों पर एन.सी.एफ. विकसित करने की प्रक्रिया शुरू की—
   - बुनियादी स्तर (3–8 वर्ष)
   - प्रारंभिक स्तर (8–11 वर्ष)
   - मध्य स्तर (11–14 वर्ष)
   - माध्यमिक स्तर (14–18 वर्ष)
   - एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 इस शृंखला की पहली रूपरेखा है।
2. निपुण भारत मिशन, आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) पर ध्यान केंद्रित करने के लिए इसे 2021 में शुरू किया गया। इसका उद्देश्य वर्ष 2026–27 तक सभी विद्यार्थियों में कक्षा 3 तक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता का विकास करना है।
3. बालवाटिका की शुरुआत की गई, इसके अंतर्गत सरकारी विद्यालयों में 3 वर्ष की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को औपचारिक रूप से लागू किया गया। बालवाटिका में खेल आधारित/शिक्षण गतिविधि आधारित/शिक्षण और भाषा समृद्ध वातावरण देने की कोशिश की जा रही है।
4. नवाचारों को बढ़ावा देने पर बल दिया गया, इसके अंतर्गत खिलौनों पर आधारित शिक्षा, कहानी सुनाना, स्थानीय सांस्कृतिक सामग्री और बहुभाषी दृष्टिकोण को पाठ्यचर्या में जोड़ा गया है। कला-एकीकृत शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और परियोजना-आधारित शिक्षा को प्राथमिकता दी गई।
5. शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं सामग्री विकास के लिए दीक्षा पोर्टल, निष्ठा— एफ.एल.एन. मोड्यूल्स और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को एन.सी.एफ.-एफ.एस. आधारित शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित किया गया तथा ई-कंटेंट और ऑडियो-विजुअल संसाधनों का निर्माण किया गया।
6. स्थानीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा दिया गया जिससे मातृभाषा या स्थानीय भाषा में पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया, ताकि बच्चे अपने परिवेश से जुड़ सकें।

7. रा.शै.अ.प्र.प. और एस.सी.ई.आर.टी. के समन्वय में बदलाव किया गया जिससे राज्यों को निर्देश दिए गए कि वे एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के आधार पर राज्य स्तरीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एस.सी.एफ.) तैयार करें।
8. आकलन में बदलाव किया गया, इसके अंतर्गत खेल, पर्यवेक्षण और गतिविधि आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा दिया गया। रिपोर्ट कार्ड की जगह होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड लागू करने की प्रक्रिया अपनाई गई।
9. साझेदारी और समुदाय सहभागिता पर बल दिया गया, जिससे अभिभावकों की भागीदारी, समुदाय के संसाधनों का उपयोग और स्थानीय ज्ञान को सम्मिलित करना— इन सबको पाठ्यचर्या में स्थान दिया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) के संभावित दीर्घकालीन प्रभाव

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) का अपेक्षित क्रियान्वयन किया जाए तो वास्तव में यह बुनियादी शिक्षा के लिए मील का पत्थर साबित हो सकता है। इस प्रारूप के भविष्य में कई संभावित सकारात्मक दीर्घकालीन प्रभाव हो सकते है। इस प्रारूप के द्वारा बच्चों में समग्र विकास का सुदृढ़ आधार विकसित हो सकता है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 पंचकोशीय विकास (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आत्मिक) को प्राथमिकता देता है जिससे विद्यार्थियों में संतुलित व्यक्तित्व और दीर्घकालिक जीवन कौशल का विकास होता है। इससे विद्यार्थी केवल परीक्षा-उन्मुख न होकर जीवन-उन्मुख शिक्षा प्राप्त करेंगे, जो उन्हें भावी नागरिक और नेतृत्वकर्ता के रूप में तैयार करेगा। इस रूपरेखा में प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में देने की सिफारिश की गई है जो विद्यार्थियों की सीखने की गति और समझ को बेहतर बनाती है। जिससे भाषा पर सुदृढ़ पकड़ विकसित होगी, जिससे बच्चों में संप्रेषण, आलोचनात्मक सोच और नवाचार की क्षमता में वृद्धि होगी। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुसार, कक्षा 3 तक प्रत्येक विद्यार्थी को मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (एफ.एल.एन.) लक्ष्य प्राप्त करना है। मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के द्वारा शिक्षा की नींव मजबूत होगी जिससे माध्यमिक और उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की प्रदर्शन गुणवत्ता में वृद्धि होगी। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 शिक्षा को विद्यार्थियों की रुचियों, क्षमताओं और अनुभवों के अनुसार अनुकूलित करने की बात करता है। इसका दीर्घकालिक प्रभाव यह होगा कि इससे विद्यार्थियों में सीखने की स्वाभाविक जिज्ञासा बनी रहेगी और सीखना एक आनंदमयी एवं प्रेरक प्रक्रिया बनेगा। बाल-केंद्रित और खेल आधारित शिक्षण के द्वारा बच्चे में सीखने के प्रति उत्सुकता तथा रुचि का विकास किया जा सकता है। शिक्षकों के प्रशिक्षण में बाल मनोविज्ञान, गतिविधि आधारित शिक्षण और तकनीक-समर्थ शिक्षण की भूमिका को शामिल किया गया है। इस प्रकार के प्रयास से शिक्षक अधिक संवेदनशील, नवाचारशील और उत्तरदायी बनेंगे जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार

होगा। यह सभी विद्यार्थियों, विशेष रूप से वंचित वर्गों के विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है। इसके दीर्घकालिक प्रभाव समाज में शिक्षा के माध्यम से समानता, समरसता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलेगा तथा प्रत्येक बच्चे को समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। इस प्रारूप में विद्यार्थियों में मूल्यों और नैतिकता का समावेश करने पर बल दिया गया है जिससे इसमें जीवन कौशल, नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय चेतना और नागरिक उत्तरदायित्व का एकीकरण किया गया है। इस प्रकार के प्रयास से विद्यार्थी एक उत्तरदायी, संवेदनशील और मूल्याधारित नागरिक बनेंगे। बुनियादी शिक्षा में नवाचार और तकनीकी समावेशन पर बल दिया गया है तथा डिजिटल संसाधनों और शिक्षण सहायक तकनीकों का उपयोग प्रारंभिक स्तर पर ही प्रस्तावित है। इससे तकनीकी साक्षरता बढ़ेगी और छात्र भविष्य की डिजिटल दुनिया के लिए तैयार होंगे। इसमें पारंपरिक परीक्षा आधारित मूल्यांकन के स्थान पर सतत और समग्र आकलन (सी.सी.ई.) को बढ़ावा दिया गया है। यह बच्चों के संपूर्ण विकास और सीखने की यात्रा का वास्तविक मूल्यांकन करेगा जिससे उन पर अनावश्यक परीक्षा-तनाव नहीं होगा। प्रारूप में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विविधता के सम्मान की बात की गई है तथा इसमें स्थानीय परंपराओं, ज्ञान और सांस्कृतिक विविधता को स्थान दिया गया है। इससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान की भावना विकसित होगी। यह एक क्रांतिकारी पहल के रूप में उभरती है जो न केवल बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा को पुनर्परिभाषित करती है, बल्कि आने वाले वर्षों में भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, गुणात्मक और भविष्योन्मुखी बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

चुनौतियाँ

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में विभिन्न राज्यों, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों और भाषायी समुदायों में एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 का एकरूपता से क्रियान्वयन करना एक बड़ी चुनौती है। कई राज्यों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए बुनियादी ढाँचा और प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी है। ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में बुनियादी संरचना, जैसे— विद्यालय भवन, शौचालय, जल, पुस्तकालय, स्मार्ट क्लास आदि की कमी, इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक बन सकती है। शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट (2021) के अनुसार कई प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के लिए पर्याप्त कक्षा-कक्ष और शैक्षिक सामग्री की कमी है। यह रूपरेखा शिक्षकों को सह-अधिगमकर्ता, मार्गदर्शक और प्रेरक की भूमिका निभाने का निर्देश देता है, परंतु अधिकांश प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा शिक्षकों को अभी तक इस रूपांतरण हेतु पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। हालाँकि यह रूपरेखा मातृभाषा में शिक्षा को प्राथमिकता देता है, लेकिन शिक्षकों की उपलब्धता और संसाधनों का अभाव, विशेषकर शहरी या बहुभाषी क्षेत्रों में, इस दिशा में रुकावट बनता है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी कई माता-पिता औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता

या एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की अवधारणाओं से अवगत नहीं हैं। इससे विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति और भागीदारी प्रभावित होती है। यह रूपरेखा समग्र, सतत और विद्यार्थी-केंद्रित मूल्यांकन की वकालत करता है, परंतु कई शिक्षण संस्थानों में अभी भी पारंपरिक परीक्षण आधारित मूल्यांकन प्रणाली प्रचलित है (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 42)। नई रूपरेखा में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.), खेलों, कला और सामाजिक व्यवहार को शामिल करने की बात कही गई है। इस तरह के बहु-आयामी मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण और समय की आवश्यकता है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं व प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा से जुड़े कर्मियों की शिक्षा और प्रशिक्षण स्तर अत्यंत असमान है जिससे एन.सी.एफ.-एफ.एस. के अनुरूप पूर्व-प्रारंभिक शिक्षा सुनिश्चित करना कठिन होता है। इसमें तकनीक आधारित शिक्षण और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सामग्री के डिजिटल संसाधनों की महत्ता को रेखांकित किया गया है, लेकिन समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों के लिए डिजिटल संसाधनों की पहुँच अब भी सीमित है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अभी भी शिक्षण सहायक उपकरणों, खेल-सामग्री, डिजिटल संसाधनों और सुरक्षित बालकेंद्रित वातावरण का अभाव है। रूपरेखा में स्थानीय संदर्भ और समुदाय की भागीदारी पर बल दिया गया है, लेकिन व्यवहार में विद्यालयों द्वारा समुदाय को सहभागी बनाने के प्रयास बहुत सीमित हैं।

सुझाव

बुनियादी शिक्षा में रुचिकर, प्रभावी तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के विकास तथा विद्यार्थीयों में जिज्ञासा, सोचने-समझने की शक्ति, रचनात्मकता और आत्मविश्वास के निर्माण के लिए जिस प्रकार से रचनात्मक शिक्षण-अधिगम परिवेश का होना आवश्यक है। इस प्रारूप के अपेक्षित परिणाम हेतु राज्यों को स्थानीय भाषाओं, सांस्कृतिक तत्वों और समुदाय-आधारित सामग्री को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए। इससे विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़ेंगे और संज्ञानात्मक विकास में तेजी आएगी। इसमें शिक्षकों की पेशेवर दक्षता के विकास पर बल दिया जाना चाहिए, जिससे एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुरूप शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पुनः डिजाइन किया जाए, विशेषकर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के संदर्भ में। इससे शिक्षकों की भूमिका केवल सूचनाप्रदाता की न होकर सीखने में सहायक और संवेदनशील मार्गदर्शक की होगी। इसके अंतर्गत खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षण का विस्तार किया जाना चाहिए, जिससे कक्षा में खेल आधारित, कहानी-केंद्रित और अनुभवात्मक शिक्षण विधियों को प्राथमिकता दी जाए। इससे बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और आत्मविश्वास का निर्माण होगा। मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (एफ.एल.एन.) पर निरंतर ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे 'निपुण भारत मिशन' के साथ समन्वय करते हुए 3–8 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों में एफ.एल.एन. कौशलों को सुनिश्चित किया जाए। इससे विद्यार्थियों में आगे की

कक्षाओं में विद्यार्थियों के सीखने की नींव मजबूत होगी और अपव्यय एवं अवरोधन दर में कमी आएगी। पंचकोशीय विकास का व्यावहारिक क्रियान्वयन पर बल दिया जाना होगा, जिससे पाठ्यसामग्री व गतिविधियों को पंचकोशीय विकास (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक) के अनुरूप तैयार किया जा सके। इससे समग्र एवं संतुलित व्यक्तित्व विकास होगा। इसमें समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया जाना होगा तथा संबंधित संसाधनों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना होगा, जिससे सभी पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों के लिए न्यायसंगत व सुलभ शिक्षा का वातावरण तैयार किया जाए, विशेष रूप से सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के लिए। इससे सामाजिक विषमताओं में कमी और सतत विकास की ओर अग्रसर समाज का निर्माण किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी के संयोजन को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए, जिससे आई.सी.टी. आधारित शिक्षण संसाधनों का उपयोग कर डिजिटल समावेशन को प्राथमिकता दी जाए, विशेषकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में। आई.सी.टी. आधारित शिक्षण संसाधनों का उपयोग करने से डिजिटल साक्षरता और लर्निंग गैप को पाटने में सहायता प्राप्त हो सकती है। निरंतर आकलन और फीडबैक प्रणाली को आवश्यक रूप से लागू किया जाना चाहिए जिससे समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की अवधारणा के तहत सतत और विकासात्मक आकलन को प्राथमिकता दी जाए। इससे विद्यार्थियों के व्यक्तिगत सीखने की गति और आवश्यकता के अनुसार शिक्षण अनुकूलित किया जा सकेगा। अभिभावकों एवं समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए जिससे शिक्षा को केवल विद्यालय तक सीमित न रखकर समुदाय की साझेदारी सुनिश्चित की जाए। इससे सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामुदायिक शिक्षण वातावरण को बल मिलेगा। नीतिगत निरंतरता एवं अनुश्रवण प्रणाली को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए जिससे सरकार और नीति निर्माताओं द्वारा समय-समय पर कार्यान्वयन की निगरानी और आवश्यक संशोधन किए जाएँ। नीतियों की स्थिरता और वास्तविक जमीनी बदलाव सुनिश्चित होंगे। राज्य स्तर पर सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) की योजनाएँ चलाई जाएँ और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा प्रशिक्षकों को एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के दृष्टिकोण, सिद्धांतों तथा शैक्षिक व्यवहारों से अवगत कराया जाए। स्थानीय भाषाओं में शिक्षण-सामग्री का निर्माण एवं वितरण सुनिश्चित किया जाए। साथ ही, बहुभाषी शिक्षकों की भर्ती को प्राथमिकता दी जाए। समुदाय आधारित जागरूकता कार्यक्रम चलाकर अभिभावकों को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के महत्व की जानकारी दी जाए। विद्यालयों में फॉर्मेटिव और अवलोकन आधारित मूल्यांकन तकनीकों को प्रोत्साहित किया जाए और शिक्षकों को उनके उपयोग में दक्ष बनाया जाए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत विकसित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– बुनियादी स्तर

(एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) भारत की विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का संकेत देती है। यह रूपरेखा 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों की शिक्षा के लिए एक नवीन, समावेशी और विकासात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो उनकी जिज्ञासा, रचनात्मकता और सामाजिक-भावनात्मक विकास को केंद्र में रखती है। इसके चार प्रमुख स्तंभ— खेल, कथाएँ, गतिविधियाँ और अनुभव आधारित शिक्षा को विद्यालयों के जीवन से जोड़ती हैं और उन्हें सीखने के लिए प्राकृतिक परिवेश प्रदान करती हैं। यह रूपरेखा संरचित एवं लचीली दोनों ही प्रकार की शिक्षण रणनीतियों को अपनाती है जिससे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार नवाचार को बढ़ावा मिलता है। इसके अंतर्गत सीखने की प्रक्रिया में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा के उपयोग पर बल दिया गया है जिससे बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं गणना कौशल को सहजता से विकसित किया जा सके। इसके अतिरिक्त अधिगम संकेतक और बहुस्तरीय शिक्षण की अवधारणाएँ शिक्षक की भूमिका को सशक्त बनाती हैं और प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत गति से सीखने को प्रोत्साहित करती हैं। यह रूपरेखा वास्तव में एक क्रांतिकारी पहल है, जो बच्चों के समग्र विकास, सीखने के प्रति रुचि और भविष्य की शिक्षा के लिए मजबूत आधार रखती है। यह रूपरेखा केवल शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण से ही समृद्ध नहीं है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार कर उसे शिक्षा में सम्मिलित करने का प्रयास भी करती है। हालाँकि, इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों को समुचित प्रशिक्षण, अभिभावकों की जागरुकता, और राज्यों के स्तर पर सहयोगात्मक कार्यनीतियों की आवश्यकता होगी। विशेष रूप से ग्रामीण और संसाधन-विहीन क्षेत्रों में इसकी सफलता सुनियोजित प्रयासों और निरंतर मूल्यांकन पर निर्भर करेगी। इस रूपरेखा ने यह सिद्ध किया है कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के अनुभवों, भावनात्मक जुड़ाव और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से बच्चों को आत्मनिर्भर एवं विचारशील नागरिक बनाने की प्रक्रिया है। इस प्रकार, यह रूपरेखा एक ऐसा आधारभूत ढाँचा प्रस्तुत करती है जो भारत के भविष्य को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और न्यायपूर्ण शिक्षा की दिशा में अग्रसर करता है।

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 एक दूरदर्शी दस्तावेज है, जो भारत के शैक्षिक परिदृश्य को बुनियादी स्तर से बदलने की क्षमता रखता है। यदि इसे समुचित संसाधनों, सतत निगरानी और शिक्षक प्रशिक्षण के साथ लागू किया जाए तो यह आने वाले वर्षों में भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वैश्विक मानकों के अनुरूप बना सकता है। हालाँकि, इसके कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों से भी सतर्क रहना होगा और समयानुसार सुधार करना आवश्यक होगा। यह प्रारंभिक शिक्षा को वैज्ञानिक, समावेशी और अनुभवजन्य बनाने का प्रयास करती है। हालाँकि, नीति की दृष्टि स्पष्ट और सशक्त है, लेकिन इसके सफल क्रियान्वयन के लिए राज्यों को दीर्घकालिक रणनीतियों, संसाधनों और सामुदायिक सहयोग की आवश्यकता होगी। वर्तमान अनुभव बताते हैं कि

परिवर्तन की दिशा में आशाजनक पहल हुई है, परंतु इसे स्थायी और सर्वव्यापी बनाने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। इस रूपरेखा का स्वरूप बच्चों के संपूर्ण विकास की ओर उन्मुख है, जो शिक्षा को निष्क्रिय कक्षा-अनुशासन से मुक्त करके एक जीवंत, आनंददायक और सहज प्रक्रिया में परिवर्तित करता है। यह शिक्षा की क्रांतिकारी पहल है जो भविष्य की शिक्षा व्यवस्था हेतु एक ठोस नींव तैयार कर सकती है।

संदर्भ

महिला और बाल विकास मंत्रालय. 2013. *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा नीति (ई.सी.सी.ई.)*. महिला और बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

यूनेस्को. 2019. अर्ली चाइल्डहुड केयर एजुकेशन एन इन्वेस्टमेंट इन वेल बींग जेंडर एक्वालिटी. *सोशल कोहेशन एंड लाइफ लांग लर्निंग*. यूनेस्को

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2021. *राष्ट्रीय बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.